

दोहावली

गोस्वामीतुलसीदासकृत ॥

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और
विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है ॥

सम्पूर्ण रामभक्तानुरागियों के उपकारार्थ

534

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी

श्रीगणेशायनमः ॥

दोहावली ॥

दोहा ।

राम बामदिशि जानकी लषण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय सुरतरु तुलसी तोर १ सीता लषण समेत प्रभु सोहत तुलसीदास ॥ हरषत सुर बरषत सुमन सगुण सुमंगलवास २ पंचबटी बट विटपतरु सीतालषण समेत ॥ सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत ३ चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सियलषण समेत ॥ रामनाम जय जाप्य कहि तुलसी अभिमत देत ४ पय अहार फल खाइ जो रामनाम षटमास ॥ सकल सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास ५ रामनाम मणि दीप धरु जीह देहरीद्वार ॥ तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि उजियार ६ हियनिर्गुण नयनन सगुण रसनानाम सुनाम ॥ मनहुँ पुरट संपुट लसत तुलसी ललित ललाम ७ सगुण ध्यानरुचि सरसनहिं निर्गुण मनते दूरि ॥ तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवनमूरि ८ एकछत्रयक मुकुटमणि सबवर्णहु पर जोय ॥ तुलसीरघुबर नामके बरणबिराजत दोय ९ रामनामको अङ्कहै सबसाधनहैसून ॥ अङ्कगये कछु हाथ नहिं अङ्करहे दशगून १० नाम रामको कल्पतरु कालि कल्याण निवास ॥ जो सुमिरतभयो भागते तुलसीतुलसीदास ११ रामनाम जपि जोहजन भये सुकृतसुख शालि ॥ तुलसी यहां जो आलसी गयो आजुकीकालि १२ नामगरीबनिवाजकोराजदेत जनजोन॥

तुलसी मन परहरत नहिं घुरविनियाकी वोन १३ काशी विधि बसि तनु तजै हठ तन तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ राम नाम अनुराग १४ मीठो अरु कठवति भरो रौताई अरु पेम॥ स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम १५ राम नाम सुमिरत सुयश भाजन भये कुजात ॥ कुतरु कुसुरपुरराज मग लहतभुवन विख्यात १६ स्वारथ सुख सपनेहु अगम परमारथ परवेश ॥ राम नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेश १७ मोर मोर सबकह कहसि तू को कहु निज नाम ॥ कै चुप साधहि सुन समझि कै तुलसी जपु राम १८ हम लखु हमहिं हमार लखु हम हमार के बीच ॥ तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जपु नीच १९ राम नाम अवलम्ब विनु परमारथ की आश ॥ वर्षत वारिद बूंद गहि चाहत चढ़न अकाश २० तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुन हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ी बड़ी बिसारे हान २१ विगरी जन्म अनेक की सुधरै अवहीं आज ॥ होहि रामको राम जपु तुलसी तजि कुसमाज २२ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों रामनाम जपु राम ॥ तुलसी तेरोहै भलो आदि मध्य परिनाम २३ दम्पति रस रसना दशन परिजन बदन सगेह ॥ तुलसी हर हित बरण शिशु सम्पति सहज सनेह २४ वर्षाऋतु रघुपति भगति तुलसी शालिसुदास ॥ रामनाम वर वरणजग सावन भादौं मास २५ राम नाम नरकेशरी कनककशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद जिमिपालहिं दल सुरसाल २६ रामनाम कलिकाल तरु सकल सुमङ्गलकन्द ॥ सुमिरत करतलसिद्धि सब पगपग परमानन्द २७ राम नाम कलिकामतरु रामभक्ति सुरधेनु ॥ सकल सुमङ्गल मूल जग गुरुपदपङ्कज रेनु २८ यथा भूमि बश बीजमें नखत निवास

अकास ॥ रामनाम सब धरममय जानत तुलसीदास २९ सकल
कामनाहीन जे रामभक्तिरस लीन ॥नाम प्रेम पीयूष ह्रद तिनहुँ
किये मन मीन ३० ब्रह्मराम ते नाम बड़ बरदायक बरदान ॥ राम
चरित शतकोटि महँ लिय महेश जिय जान ३१ शबरी गीधसु-
सेवकन सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित खल वेद वि-
दित गुण गाथ ३२ राम नाम पर रामते प्रीति प्रतीति भरोस॥सो
तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगलकोस ३३ लङ्क विभीषण
राज कपि पति मारुत खग मीच ॥ लही राम सो नाम रतिचाहत
तुलसी नीच ३४ हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल क-
ल्याण ॥ राम नाम नित कहत हर गावत वेद पुराण ३५ तुलसी
प्रीति प्रतीतिसों राम नाम जपु जागु ॥ किये होय विधि दाहिनो
देइ अगेही भागु ३६ जल थल नभगति अमित अति अग जग
जीव अनेक ॥ तुलसी तोहिं से दीनको राम नामगत एक ३७
राम भरोसो राम बल राम नाम विश्वास ॥ सुमिरि नाम मंगल
कुशल मांगत तुलसीदास ३८ राम नामरति रामगति राम नाम
विश्वास ॥ सुमिरत शुभमंगल कुशल चहुँदिश तुलसीदास ३९
रसना सांपिनि वदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसीप्रेम न
रामसों ताहि बिधाता वाम ४० हिय फाटहु फूटहु नयनजरउतेतन
केहिकाम॥द्रवहिंस्रवहिंपुलकहिंनहींतुलसी सुमिरत राम४१ राम
हिंसुमिरत रण भिरत देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिंनपुलक
तन ते जग जीवत जाय ४२ ॥ सोरठा ॥ हृदय सो कुलिश स-
मान जो न द्रवहि हरिगुण सुनत ॥ करन रामगुण गान जीहसो
दादुर जीहसम ४३ स्रवै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुवीर
यश ॥ ते नैना जनिदेहु रामकरहु वरु आंधरे ४४ रहै न जलभरि

पूरि रामसुयश सुन रावरी ॥ तिन आंखिन में धूरि भर भर मूठी मेलिये ४५ बारक सुमिरत तोहिं होहिं तिनहिं सनमुख सदा ॥ क्यों न सम्हारहि मोहिं दयासिंधु समरत्थके ४६ साहिबहोत सरोष सेवक को अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष राम न कबहूं उर धरे ४७ ॥दोहा॥ तुलसीरामहि आपुते सेवककीरुचिमीठि ॥ सीतापतिसे साहिबहि कैसे दीजै पीठि ४८ तुलसी जाके होयगी अंतर बाहर दीठि ॥ सो क्यों कृपालहि देइगो केवट पालहि पीठि ४९ प्रभु तरुतर कपि डारपर कीन्हें आपु समान ॥ तुलसी कहूं न रामसों साहिब शीलनिधान ५० रे मन सब सों निरसकै सरस राम सों होहि ॥ भलो सिखावन देत है निशिदिन तुलसी तोहि ५१ हरे चरहिं तापहिं बरे फरे पसारहिं हाथ ॥ तुलसी स्वारथ मीत सब परमारथ रघुनाथ ५२ स्वारथ सीताराम सों परमारथ सियराम ॥ तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहाकछु काम ५३ स्वारथ परमारथ सकल सुलभ एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ५४ तुलसी स्वारथ रामहित परमारथ रघुबीर ॥ सेवक जाके लषण से पवनतनय रणधीर ५५ ज्यों जगबैरी मीन को आपु सहितपरिवार ॥ त्यों तुलसी रघुबीर बिनु गति आपनी बिचार ५६ रामप्रेम बिन दूबरो रामप्रेमही पीन ॥ रघुबर कबहूं करहिंगे तुलसी ज्यों जलमीन ५७ राम सनेही रामगति रामचरणरति जाहि ॥ तुलसी फल जगजन्मको दियो बिधाता ताहि ५८ आपु आपनेते अधिक जेहि प्रिय सीताराम ॥ तेहिके पगकी पानहीं तुलसी तन कोचाम ५९ स्वारथ परमारथ रहित सीताराम सनेह ॥ तुलसीसो फल चारिको फल हमारमत एह ६० जेजन रूखे विषयरस चिकने रामसनेह ॥ तुलसी ते प्रिय रामको कानन बसहिं कि गेह ६१

यथा लाभ संतोष सुख रघुवर चरण सनेह॥ तुलसी ज्यों मन मूड़ सों जसकानन तसगेह ६२ तुलसी जोपै रामसों नाहिंन सहज सनेह॥ मूड़ मुड़ायो बादिही भांड़ भये तजिगेह ६३ तुलसी श्री रघुबीर तजि करे भरोसो और॥ सुख संपति की काचली नरकहु नाहीं ठौर ६४ तुलसी परि हरि हरि हरहि पांवर पूजहिं भूत॥ अंत फजीहत होहिंगे ज्यों गनिकाके पूत ६५ सेये सीतारामनहिंभजेन शंकर गौरि॥जन्म गँवायो बादिही रटत पराई पौरि६६ तुलसीहरि अपमान ते होइ अकाज समाज॥ राज करत रज मिलगये सदल सकुल कुरुराज६७ तुलसी रामहिं परिहरे निपट हानिसुनिबेउ॥ सुरसरिगत सोई सलिल सुरासरिस गंगेउ६८रामदूरि मायाबढ़ति घटति जान मनमांह॥ धूरिहोति रवि दूरि लखि शिरपर पगतरछांह ६९ साहिब सीतानाथसों जबघटिहै अनुराग॥ तुलसीतबहीं भालते भभरि भागिहै भाग ७० करिहौ कोशलनाथतजि जबहीं दूसरि आस॥ जहां तहां दुख पाइहौ तबहीं तुलसीदास ७१ बिंधनईंधन पाइये सायर जुरै न नीर॥ पड़े उपास कुबेरघर जो विपक्षरघुवीर ७२ वर्षाको गोवर भयो को चहै को करै प्रीति॥ तुलसी तू अनुभवहि अब रामबिमुखकी रीति ७३ सबहि समरथहि सुखद प्रिय अच्छमप्रिय हितकारि॥ कबहुं न काहुहि रामपै तुलसी कहा बिचारि ७४ तुलसी उद्यम करमयुग तब जहँ राम सुदीठि॥ होइसुफलसोइ ताहि सब सन्मुख प्रभुतन पीठि ७५ प्रेम कामतरु परिहरत सेवत कलितरु ठूंठ॥ स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ झूंठ ७६ निज दूषण गुण रामके समुझे तुलसीदास॥ होय भलो कलिकालहू उभय लोक अनयास ७७ कैतोहिंलागै राम प्रिय कै तू प्रभुप्रिय होहि॥ द्वैमहँ रुचै जो सुगम सो कीबै तुलसी तोहि ७८ तुलसी

दैमहँ एकही खेलछांडि छल खेलु ॥ कै करु ममता रामसों कै मम-
ता पर हेलु ७६ निगम अगम साहेब सुगम राम साचिलो चाह॥
अम्बु अशन अवलोकियत सुलभ सबै जगमाह ८० सम्मुख आ-
वत पथिक ज्यों दिये दाहिना बाम॥ तैसोइ होत सुआपको त्यों-
ही तुलसीराम ८१ राम प्रेमपथ मों वये दिये विषय तनपीठि॥ तु-
लसी केचुलि परिहरे होत सांपहू दीठि ८२ तुलसी जौलौं विषय
की सुधा माधुरी मीठ॥ तौलौं सुधा सहस्रसम राम भगत सुठसी-
ठ ८३ जैसो तैसो रावरो केवल कोशलपाल॥ तो तुलसीको है
भलो तिहूंलोक तिहुंकाल ८४ है तुलसीके एक गुण अवगुण
निधि कहैंलोग॥ भलो भरोसो रावरो राम रीझिबे योग ८५ प्री-
ति रामसों नीतिपथ चलियराग रिस जीति॥ तुलसी संतनके मते
इहै भक्तिकी रीति ८६ सत्य वचन मानसविमल कपट रहित कर-
तूति॥ तुलसी रघुवर सेवकहि सके न कलियुग धूति ८७ तुलसी
सुख जो रामसो दुखी सो निज करतूति॥ करम वचन मन ठीक
जेहि तेहि न सकै कलिधूति ८८ नातो नाते रामके राम सनेहस-
नेहु॥ तुलसी मांगत जोरिकर जन्म जन्म विधिदेहु ८९ सब सा-
धन को एक फल जेहि जानै सोइ जान॥ ज्यों त्यों मन मन्दिर
बसहिं रामधरे धनुवान ९० जोजगदीश तौ अतिभलो जो महीश
तौ भाग॥ तुलसी चाहत जन्मभरि रामचरण अनुराग ९१ परहु
नरक फल चारि शिशु मीचडाकिनी खाउ॥ तुलसी रामसनेहको
जो फल सो जरिजाउ ९२ हितसों हित रतिरामसों रिपुसों बैर वि-
हाउ॥ उदासीन सबसोंसरल तुलसी सहजसुभाउ ९३ तुलसी म-
मता रामसों समता सबसंसार॥ राग न रोष न दोष दुख दास भये
भवपार ९४ रामहि डरु करु रामसों ममता प्रीति प्रतीति॥ तुलसी

निरुपधि रामको भये हारिहूं जीति ९५ तुलसी रामकृपालसों कहि-
सुनाउ गुण दोष॥ होय दूबरी दीनता परमपीन संतोष ९६ सुमि-
रण सेवा रामसों साहबसों पहिंचान॥ ऐसेहु लाभ न ललक जो
तुलसी नितहितहान ९७ जाने जानन जोइये विनु जानेको जान॥
तुलसी यह सुनि समुझि हिय आनि धरे धनुवान ९८ करमठ कठ-
मलिया कहै ज्ञानी ज्ञान विहीन॥ तुलसी त्रिपथ विहायगो राम
दुआरे दीन ९९ बाधक सब सबकेभये साधकभये न कोइ॥ तुलसी
राम कृपालते भली होय सो होइ १०० शङ्कर प्रिय ममद्रोही शिव
द्रोही मम दास॥ ते नर करहिं कल्पभरि घोर नरकमहँ वास १०१
बिलगबिलग सुख संग दुख जियन मरण सोइ रीति॥ रहे ते राखे
रामके गये ते उचित अनीति १०२ जाय कहब करतूति विनु जाय
योग विनु क्षेम॥ तुलसी जाइ उपाय सब विना रामपद प्रेम १०३
लोगमँगतु सबयोगही योग जाय विनुक्षेम॥ त्यों तुलसीके भाव
गतु रामप्रेम विनु नेम १०४ राम निकाई रावरी है सबहीको नीक॥
जो यह सांची है सदा तौ नीको तुलसीक १०५ तुलसी राम जो
आदरो खोटो खरो खरोइ॥ दीपक काजर शिरधरो धरो सुधरो धरोइ
१०६ तन विचित्र कायर वचन अहि अहार मन घोर॥ तुलसी
हरि भये पक्षधर ताते कह सब मोर १०७ लहै न फूटी कौड़िहू को-
चाहै क्यहि काज॥ सो तुलसी महँगो कियो राम गरीबनिवाज
१०८ घर घर मांगे टूक पुनि भूपति पूजे पायँ॥ ते तुलसी सब
राम विनु ते अब राम सहायँ १०९ तुलसी राम सुदीठि ते निबल
होत बलवान॥ बालि वैर सुग्रीवके कहा कियो हनुमान ११० तु
लसी रामहिं ते अधिक रामभक्त जिय जान॥ ऋणियां राजाराम
सो धनी भये हनुमान १११ कियो सो सेवक धर्म कपि प्रभु कृतज्ञ

जिय जान ॥ जोरि हाथ ठाढ़े भये बरदायक बरदान ११२ भक्तहेतु
भगवान प्रभु राम धरोतनु भूप॥ किय चरित्र पावन परम प्राकृत
नर अनुरूप ११३ ज्ञान गिरा गोतीत अज माया गुणगोपार ॥
सोइसच्चिदानन्दघनकरतचरित्र उदार ११४ हिरण्याक्ष भ्रातासहि
तमधुकैटभ बलवान् ॥ ज्यहिमारे सो अवतरयो कृपासिन्धुभगवान
११५ शुद्ध सच्चिदानन्दमय कन्द भानुकुलकेतु ॥ चरितकरतनर
अनुहरत संसृतसागरसेतु ११६ बाल विभूषण बसन बरधूरिधूसरि
तअङ्ग ॥ बालकेलि रघुवर करत बाल बन्धु सबसङ्ग ११७ अनुदिन
अवध बधावने नित नव मङ्गल मोद ॥ मुदित मातु पितु लोग
लखि रघुवर बालबिनोद ११८ राज अजिर राजत रुचिर कोशल
पालक बाल ॥ जानुपाणिचर चरितबर सगुण सुमङ्गलमाल ११९
नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ॥ ललितबसन
भूषण ललित ललित अनुज शिशु साथ १२० रामभरतलक्ष्मण
ललित शत्रुशमन शुभनाम ॥ सुमिरत दशरथसुवन सब पूजहिं
सब मन काम १२१ बालक कोशलपालके सेवक बाल कृपाल ॥
तुलसीमन मानस बसत मङ्गल मञ्जु मराल १२२ भक्तभूमिभूसुर
सुरभि सुरहित लागि कृपाल ॥ करत चरित धरि मनुज तनुसुनत
मिटहि जञ्जाल १२३ निज इच्छा प्रभु अवतरैं सुरगो द्विज हित
लागि ॥ सगुण उपासक सङ्ग तहँ रहे मोक्ष सबत्यागि १२४पर-
मानन्द कृपायतन मन परिपूरणकाम ॥ प्रेमभक्तिअनपावनीहमहिं
देहु श्रीराम १२५ बारिमथे घृत होय बरु सिकताते बरु तेल ॥
बिनु हरिभजन न भवतैर यह सिद्धांत अपेल १२६ हरि माया
कृत दोष गुण बिनुहरिभजन न जाहिं ॥ भजिय राम सब काम
तजि अस बिचारि मनमाहिं १२७ जो चेतनकहँ जड़ करैं जड़ै

करहिं चैतन्य ॥ अससमरथ रघुनायकहि भजहिंजीवतेधन्य १२८ श्रीरघुवीर प्रताप ते सिन्धुतरे पाषाण ॥ ते मतिमन्द जे राम तजि भजहिं जाय प्रभु आन १२९ लवनिमेष परमान युग वर्ष कल्प शरचण्ड ॥ भजहिं न मन त्यहि रामकहँ कालजासु कोदण्ड १३० तवलगि कुशल न जीवकहँ सपन्यहुँ मन विश्राम ॥ जवलगि भजत न रामपद शोकधाम तजिकाम १३१ विनु सतसङ्ग न हरिकथा त्यहि विनु मोह न भाग ॥ मोहगये विनु रामपद होय न दृढ़ अनुराग १३२ विनु विश्वासै भक्ति नहिं त्यहि विनु द्रवहिं न राम ॥ राम कृपा विनु सपनेहुँ जीव न लह विश्राम १३३ सोरठा ॥ अस विचारि मन धीर तजि कुतर्क संशय सकल ॥ भजहु राम रघुवीर करुणाकर सुन्दर सुखद १३४ भाववश्य भगवान सुखनिधानकरुणाभवन ॥ तजिममता मद मान भजिय सदा सीतारमन १३५ कहहिं विमलमतसन्त वेद पुराण विचारिसव ॥ द्रवैं जानकीकन्त तव छूटै संसारदुख १३६ विन गुरुहोइ न ज्ञान ज्ञान कि होइ विराग विनु ॥ गावहिं वेद पुरान सुख कि लहिय हरिभक्ति विनु १३७ दोहा ॥ रामचन्द्रके भजन विनु जो चह पद निर्वान ॥ ज्ञानवन्त अपि सो नर पशुविन पूछ विषान १३८ जरो सो सम्पति सदन सुख सुहृद मातु पितु भाइ ॥ ससुख होत जो रामपद करै न सहज सहाइ १३९ सोई साधु सुनि समुझिकर राम भक्ति थिरताइ ॥ लड़िकाईको पैरिबो तुलसी बिसरि न जाइ १४० सबै कहावतरामके सबहि रामकी आस ॥ राम कहैं ज्यहि आपनो त्यहिभजु तुलसीदास १४१ ज्यहि शरीर रति रामसों सोइ आदरे सुजान ॥रुद्रदेह तजि नेह वश वानरभे हनुमान १४२ जानि रामसेवासरससमुझि करव अनुमान ॥ पुरिखाते सेवकभये हरते भे हनुमान १४३ तुलसी

रघुवर सेवकहि खल दांदस मनमाँख ॥ बाजराजके बालकहि लवा दिखावत आँख १४४ रावणरिपुके दाससों कायरकरहिं कुचालि॥ खर दूषण मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि १४५ पुण्य पाप यश अयशके भावी भाजन भूरि ॥ सङ्कट तुलसीदासको राम करहिंगे दूरि १४६ खेलत बालक ब्याल सँग मेलत पावक हाथ॥ तुलसी शिशु पितु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ १४७ तुलसीदिनभल शाहकहँ भली चोरकहँ राति ॥ निशिवासर ताकहँ भलो मानैराम इताति १४८ तुलसी जन निज सुनि समुझि कृपासिन्धु रघुराज॥ महँगे मणि कञ्चन किये सोंधो जग जल नाज १४९ सेवाशील सनेह वश सुखद सुयोग बियोग ॥ तुलसी ते सब रामसों सुखद सुयोग बियोग १५० चारि चहत मनसा अगम चनक चारिको लाहु ॥ चारि परिहरे चारिको दानि चारि चषचाहु १५१ सूधेमन सूधे वचन सूधी सब करतूति ॥ तुलसीसूधी सकलबिधि रघुबरप्रेम प्रसूति १५२ बिषाबिद बोलनि मधुर मन कटुकर हृदय मलीन ॥ तुलसीराम न पाइये भये बिषय जलमीन १५३ वचन बेषते जो बनै सो बिगरै परिणाम ॥ तुलसी मनते जो बनै बनी बनाई राम १५४ नीच मीच लै जाइ जो राम रजायसु पाइ ॥ तौ तुलसीतेरो भलो नत अनभलो अघाइ १५५ जातिहीन अघ जन्ममहि मुक्ति कीन असि नारि ॥ महामन्द मन सुख चहहिं ऐसे प्रभुहिं बिसारि १५६ बन्धु बधूरत कयहि कियो वचन निरुत्तर बालि ॥ तुलसीप्रभु सुग्रीवकी चितै न कछूकुचालि १५७ बालि बली बलशालिदल सखाकीन्हकपिराज॥तुलसीरामकृपालकोबिरदगरीबनिवाज १५८ कहा बिभीषण लैमिलो कहा बिगारीबालि ॥ तुलसीप्रभु शरणागतहि सबदिनआयो पालि १५९ तुलसी कोशलपालसोंकोश-

रणागतपाल ॥ भजो विभीषण बंधुभय भंज्यो दारिदकाल १६०
कुलिशहुचाहि कठोर अति कोमल कुसुमहुचाहि ॥ चित खगेश
असरामकर समुझिपरै कहुकाहि १६१ बलकल भूषण फलअशनि
बिनशय्या द्रुमप्रीति ॥ तेहिसमय लंकादई यहरघुबरकीरीति १६२
जो संपति शिवरावणहिं दीनदिये दशमाथ ॥ सोइ संपदा विभी-
षणहिं सकुचि दीनिरघुनाथ१६३ अविचलराज विभीषणहिंदेहिं
रामरघुराज ॥ अजहुं बिराजत लंकपर तुलसीसहितसमाज १६४
कहा बिभीषण लैमिल्यो कहा दियो रघुनाथ ॥ तुलसी यह जाने
बिना मूढ़मीजिहैंहाथ १६५ बैरिबन्धु निशिचरअधम तजो न भरे
कलंक ॥ झूंठअर्थ सियपरिहरी तुलसीसोय अशंक १६६ त्यहिस-
माज कियो कठिनपन जेहि तौल्यो कैलास ॥ तुलसाप्रभु महिमा
कहौंसेवकको बिश्वास १६७सभासभासद निरखिपट पकरिउठाये
हाथ तुलसीकिये इगारहो बसन बेष यदुनाथ १६८ त्राहितीन
कहि द्रौपदी तुलसी राजसमाज ॥ प्रथम बढ़ेपट चित बिकल चहत
चकित निजकाज १६९ सुखजीवन सबकोउचहत सुखजीवनहरि
हाथ ॥ तुलसीदाता मांगन्यो घ्यखियत अबुध अनाथ १७० कृप-
णदेइ पाइयपरो बिनसाधन सिधिहोय ॥ सीतापति सम्मुखसमुझि
जोकीजै शुभसोय १७१ दंडकबन पावनकरन चरणसरोजप्रभाउ॥
ऊसरजामहि खलतरहि होइरंकतेराउ १७२ बिनहीं ऋतु तरुवर
फरहिंशिलाद्रवहिंजलजोर ॥रामलषण सिय करिकृपा जब चित-
वहिं जेहिओर १७३ शिलासो तियभइ गिरितरे मृतक जियेजग
जान ॥ रामअनुग्रहसगुनशुभ सुलभ सकल कल्यान १७४ शि-
लाशाप मोचनचरण सुमिरहु तुलसीदास ॥ तजहुशोच संकटमि
टहिं पूजहि गनकीआस १७५ मेरेजियाये भालुकपि अवध विप्र

को पूत ॥ सुमिरहु तुलसी ताहितू जाको मारुतदूत १७६ कालक-
रम गुण दोष जग जीव तिहारे हाथ॥तुलसी रघुबर रावरो जान जा-
नकीनाथ १७७ रोगनिकर तनु जठरपन तुलसीसँग को लोग ॥
रामकृपालय पालिये दीन पालिबे योग १७८ मोसम दीन न दीन
हित तुमसमान रघुबीर ॥ असबिचारि रघुबंशमणि हरहु बिषम भ-
वभीर १७९ भवभुवंग तुलसी नकुल डसतज्ञान हरिलेत ॥ चित्रकूट
इकऔषधी चितवत होत सचेत १८० हौंहुं कहावत सबकहत राम
सहत उपहास ॥ साहब सीतारामसों सेवक तुलसीदास १८१ राम
राजराजत सकल धरम निरत नरनारि ॥राग न रोष नदोषदुखसुलभ
पदारथचारि १८२ रामराज संतोषसुख घरबन सकल सुपास॥सुरतरु
तरु सुरधेनु महि अभिमत भोग विलास १८३ खेती बणि विद्या
वणिज सेवा शिल्प सो काज॥तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफलराम
के राज १८४ दंडयतिनकर भेदजहँ नरतक नृत्यसमाज ॥ जीतहु
मनहिंसुनियअस रामचंद्रकेराज १८५कोपे शोचतपीचकर करिय
निहारनकाज ॥ तुलसी परमित प्रीतिकी रीति राम के राज १८६
मुकुर निरखि मुख रामभ्रू गनत गुनहिं दै दोष ॥ तुलसी से शठ
सेवकनि लखि जिन परहि सरोष १८७ सहसनाम सुनि भनित
सुनि तुलसी बल्लभ नाम ॥ सकुचत हिय हँसि निरखि सिय धरम
धुरंधर राम १८८ गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग
पानि ॥ हियहर्षे रघुबंशमणि प्रीति अलौकिक जानि १८९ तुल-
सी बिलसत नखत निशि शरद सुधाकर साथ ॥ मुक्ता झालर
झलक जनु राम सुयश शिशुहाथ १९० रघुपति कीरति कामिनी
क्योंकहै तुलसीदास ॥ शरद प्रकाश अकाश छबि चारु चिबुक
तिलजास १९१ प्रभु गुणगण भूषण बसन बिशद बिशेष सुदेश॥

राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतब केश १९२ राम चरित रा-
केशकर सरिस सुखद सबकाहु ॥ सज्जन कुमुद चकोर चितहित
बिशेष बड़लाहु १९३ रघुबर कीरति सज्जननि शीतल खलनिसु-
ताति ॥ ज्यों चकोर चप चकवनि तुलसी चांदनि राति १९४ राम
कथा मंदाकिनी चित्रकूट चितचारु ॥ तुलसी सुभग सनेह बन
सिय रघुबीर बिहारु १९५ श्याम सुरभि पय बिशद अति गुनदक-
रहिं सब पान ॥ गिरा ग्राम सिय रामयश गावहिं सुनहिं सुजान
१९६ हरिहर यश सुरनर गिरन्ह वर्णहिं सुकबि समाज ॥ हाटी हा-
टक घटित चरु रांधे स्वाद सुनाज १९७ तिलपर राख्यो सकल जग
विदित बिलोकत लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी कोउ न जानिबे
योग १९८ सोरठा ॥ राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर॥
अबिगति अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह १९९ दोहा॥
माया जीव सुभाव गुण काल करम महदाद ॥ ईश अंकते बढ़त
सभ ईशअंक बिनुबाद २०० हित उदास रघुबर बिरह बिकल सकल
नरनारि ॥ भरत लषण सिय गति समुझि प्रभुचप सदा सुबारि २०१
सीय सुमित्रासुवन गति भरत सनेह सुभाउ ॥ कहिबे को शारद
सरस जनिबेको रघुराउ २०२ जानहिं राम न कहिसकैं भरतलपन
सिय प्रीति॥समुझि सो सुनि तुलसी कहत हठ शठताकीरीति २०३
सब बिधि समरथ सकल कहि सहिसाँसन दिन राति ॥ भलो नि-
बाहो सुनि समुझि स्वामिधर्म सबभांति २०४ भरतहि होइ न राज
मद बिधि हरि हर पदपाइ ॥ कबहुंक काँजी सीकरनि क्षीर सिन्धु
बिनशाइ २०५ संपति चकई भरतचक मुनि आयसुखिलवार ॥ति-
हिनिशि आश्रम पींजरा राखेभा भिनुसार २०६ सधनचोरसँग सु-
दितमन धनीगहे ज्यों फेट ॥ त्यों सुग्रीव बिभीषणहि भई भरतकी

भेंट २०७ रामसराहे भरतउठि मिलेराम समजानि ॥ तदपि विभी-
षण कीशपति तुलसी गरन गलानि २०८ भरतश्यामतन रामसम
सबगुण रूपनिधान ॥ सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब क-
ल्यान २०९ लसत लषनमूरतिमधुर सुमिरहु सहित सनेह ॥ सुख
संपति कीरति विजय सगुण सुमंगल गेह २१०नामशत्रुसूदन सु-
भग सुखमाशील निकेत ॥ सेवत सुमिरत सुलभसुख सकल सुमं-
गलदेत २११ कौशल्या कल्याणमयमूरति करत प्रणाम ॥ शकुन
सुमंगल काजशुभ कृपाकरहिं सियराम २१२ सुमिर सुमित्रा नाम
जग जेतिय लेहिं सुनेम ॥ सुवनलषन रिपुदमन से पावहिं पति
पद प्रेम २१३ सीताचरण प्रणामकरि सुमिरि सुनाम सुनेम ॥
सो तिय होहि पतिदेवता प्राणनाथ प्रिय प्रेम २१४ तुलसीकेवल
कामतरु राम चरित्र अराम ॥ कलितरु कपि निश्चर कहत हमहिं
किये विधि बाम २१५ मातु सकल सानुज भरत गुरु पुरलोगसु-
भाउ ॥ देखत देखत केकयिहि लङ्कापति कपिराउ २१६ सहजस-
रल रघुवर बचन कुमति कुटिलकरि जान ॥ चले जोंक जिमिवक्र
गति यद्यपि सलिल समान २१७ दशरथ नाम सुकामतरु फलैस-
कल कल्यान॥धरणि धाम धन धरमसुत सदगुणरूपनिधान २१८
तुलसी जान्यो दशरथहि धर्म्म न सत्य समान ॥ राम तजे ज्यहि
लागिवत आपु परिहरे प्रान २१९ राम बिरह दशरथ मरण मुनि
मन अगम सुमीचु ॥ तुलसी मङ्गल मरणतरु शुचि सनेह जल
सींचु २२० सोरठा ॥ जीवन मरण सनाम जैसे दशरथरायको ॥
जियत खिलाये राम राम बिरह तनु परिहरेउ २२१ दोहा ॥ प्रभुहि
बिलोकत गीध गति सिय हित घायल नीचु ॥ तुलसी पाई गीध-
पति मुक्ति मनोहर मीचु २२२ बिर्त्ति कर्म्मरत भरत मुनि सिद्ध ऊंच

अरु नीच ॥ तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराजकी मीच २२३
मुये मरत मरि हैं सकल घरीपहरके बीच ॥ लही न काहू आजलौं
गीधराजकी मीच २२४ मुये मुक्त जीवत मुकत मुकत मुकतहूबीच॥
तुलसी सबहीते अधिक गीधराजकी मीच २२५ रघुबर विकल बि-
हङ्गलखि सो बिलोकि दोउ बीर॥सियसुधिकहि सिय रामकहितजी
देह मतिधीर २२६ दशरथते दशगुणभगति सहे तासु करकाजु॥
शोचत बंधु समेतप्रभु कृपासिंधु रघुराजु २२७ केवट निशिचर बि-
हँगमृग कियेसाधुसनमानि॥तुलसी रघुबरकी कृपा सकल सुमंगल
खानि २२८ मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुतपूत॥सकल सिद्ध-
कर कमलतल सुमिरत रघुबरदूत २२९ धीरवीर रघुबीर प्रिय सुमिरि
समीरकुमार॥ अगम सुगमसबकाजकर करतल सिद्धिविचार २३०
सुखमुदमंगल कुमुदविधु सगुण सरोरुहभानु॥करहुकाज सबसिद्धि
शुभ आनिहिये हनुमानु २३१ सकल काज शुभसमउभलसगुण
सुमंगल जानु ॥ कीरति बिजय बिभूति भलि हियहनुमानहिआनु
२३२ शूरशिरोमणि साहसी सुमति समीरकुमार ॥सुमिरतसबसुख
संपदा मुदमंगलदातार २३३ तुलसीतनु सरसुख जलज भुजरुज
गजबरजोर ॥ दलत दयानिधि देखिये कपिकेशरी किशोर२३४
भुजतरु कोटर रोगअहि बरबश कियो प्रवेश ॥ बिहँगराज बाहन
तुरत काढ़िय मिटै कलेश २३५ बाहु बिटप सुख बिहँग थल लगी
कुपीर कुआगि ॥रामकृपाजल सींचिये वेगि दीन हितलागि २३६
सोरठा ॥ मुक्तिजन्म महिजानि ज्ञानखानि अघहानिकर ॥ जहँ
बस शंभुभवानि सो काशी सेइयकसन २३७ जरत सकल सुरवृन्द
विषमगरल जेहि पान किय ॥ तेहि न भजसिमतिमन्द को कृपालु
शंकर सरिस २३८॥ दोहा॥ बासरढासनिकेढका रजनी चहुँदि-

शिचोर ॥ शंकर निजपुर राखिये चितै सुलोचन कोर२३९अपनी बीसो आपुही पुरिहि लगायेहाथ ॥ क्यहिविधि बिनती विश्व की करै विश्वके नाथ २४० और करै अपराधकोउ और पावफल भोग ॥ अति विचित्र भगवंत गति कोउ न जानवे योग २४१ प्रेमसरी परपंच रुज उपजी अधिक उपाधि ॥ तुलसी भलोसुवेदई वेगि वांधिये व्याधि २४२ हम हमार आचार बड़ भूरि भारधर शीश ॥ हठि शठ परवश परत जिमि कीर कोश कृमिकीश २४३ क्यहि मग प्रविशत जाति केहि ज्यों दर्पण में छांह ॥ तुलसीत्यों जग जीवगति करी जीहके नांह २४४ सुखसागर सुखनींद वश सपने सब करतार ॥ माया मायानाथकी को जग जाननहार २४५ जीव सीव सम सुखशयन सपने कछु करतूति ॥ जागत दीन मलीन सोइ विकल विपाद विभूति२४६सपने होय भिखारि नृप रङ्क नाकपति होय ॥ जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच जिय जोय२४७तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच॥ चपरि चपेटे देतनित केशगहे करमीच २४८ करमखरी कर मोह थल अंक चराचर जाल ॥ हनत गनत गनि गुणि हनत जगत ज्योतिषी काल २४९ कहिवे कहँ रसनारची सुनिवे कहँ कियका- न ॥ धरिके चितहित सहित सुनि परमारथहिसुजान २५० ज्ञान कहै अज्ञान बिन तमबिनु कहै प्रकास ॥ निरगुण कहै जोसगुण विनु सो गुरु तुलसीदास२५१ अंक अगुण आखर सगुणसमुझि उभय आपार ॥ खोये राखे आपभल तुलसी चारु विचार २५२ परमारथ पहिंचानि मति लसति विषय लपटानि ॥ निकसि चिता ते अधजरति मानहु सतीपरानि २५३ शीश उघारन किनकहेउ बरजिरहेप्रियलोग॥घरही सती कहावतीजरतीनाहिं वियोग २५४

खरिआ खरी कपूर सब उचित न पियतिय त्याग ॥ कै खरिआ मोहिं मेलिकै बिलम बिवेक बिराग २५५ घरकीन्हे घरु जात हैं घरछांड़े घरजाइ ॥ तुलसी घर बन बीचही राम प्रेमपुरछाइ २५६ दिये पीठ पाछे लगै सन्मुख होत पराय ॥ तुलसी संपति छांहज्यों लखि दिन बैठ गवांय २५७ तुलसी अद्भुत देवता आशा देवी नाम ॥ सेये शोक समर्पई बिमुख भये अभिराम २५८ सोई सेंबर टेसुवा सेवत सदा बसंत ॥ तुलसी महिमा मोहकी सुनत सराहत संत २५९ करत न समुझत झूंठ गुण सुनत होत मतिरङ्क ॥ पारद प्रकट प्रपंच मय सिद्धिहि नाउ कलङ्क २६० ज्ञानी तापस शूर कबि कोविद गुण आगार ॥ केहिके लोभ बिडंबना कीन्ह न यहि संसार २६१ श्री मद बक्र न कीन केहि प्रभुता बधिर न काहि ॥ मृगनयनी के नयन शर को अस लागि न जाहि २६२ व्यापि रहेउसंसार महँ माया कटक प्रचंड ॥ सेनापति कामादिभट कपट दंभ पाखंड २६३ तात तीनि अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ ॥ मुनि बिज्ञान सुधाम मन करहिं निमिष महँ क्षोभ २६४ लोभके इच्छा दंभ बल कामके केवल नारि ॥ क्रोध के परुष बचन बल मुनिवर कहहिं बिचारि २६५ काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोहके धारि ॥ तिनमहँ अति दारुण दुखद मायारूपी नारि २६६ का नहिं पावक जरिसकै का न समुद्र समाइ ॥ का न करैं अबलाप्रबल कयहि जग काल न खाइ २६७ जन्मपत्रिका बर्त्तिकै देखहु मनहिं बिचारि ॥ दारुण बैरी मीचुके बीच बिराजति नारि २६८ दीपशिखा सम युवति रस मनजनि होसि पतंग ॥ भजहि रामतजि काममद करहिं सदा सतसंग २६९ काम क्रोध मद लोभरत गृहासक्त दुखरूप ॥ ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तमकूप २७० गृह-

गृहीत पुनि बातबश त्यहि पुनि बिच्छी मार ॥ ताहि पियाई बा-
रुणी कहहु कौन उपचार २७१ ताहि कि सम्पति सगुण शुभ स-
पनेहु मन विश्राम ॥ भूत द्रोहरत मोहबश राम विमुख रतिकाम
२७२ कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक ॥ होइ
घुनाक्षर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक २७३ खल प्रबोध जग शोध
मन को निरोध कुल शोध ॥ करहिं ते फोकट पचि मरहिं सपनेहु
सुख न सुबोध २७४ ॥ सोरठा ॥ कोउ विश्राम कि पाव तात सहज
सन्तोष बिनु ॥ चलै कि जल बिनु नाव कोटि यतन पचि पचिमरै
२७५ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ॥ अस
बिचारि मन माहिं भजिय महामायापतिहि २७६ ॥ दोहा ॥ एक
भरोसो एक बल एक आश विश्वास ॥ एक राम घनश्याम हित
चातक तुलसीदास २७७ जो घन बर्षै समय शिर जो भरि जन्म
उदास ॥ तुलसी याचक चातकहि तऊ तिहारी आस २७८ चातक
तुलसीके मते स्वातिहु पियै न पानि ॥ प्रेम तृषा बाढ़त भला घटे
घटैगी कानि २७९ रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गइ अंग ॥
तुलसी चातक प्रेमको नित नूतन रुचि रंग २८० चढ़त न चातक
चित कबहुं पिय पयोदके दोष ॥ तुलसी प्रेम पयोधिकी ताते नाप
न जोष २८१ बरषि परुष पाहन पयद पंखकरौटुक टूक ॥ तुलसी
परा न चाहिये चतुर चातकहि चूक २८२ उपलबरषि गरजत तरजि
डारत कुलिश कठोर ॥ चितौ कि चातक मेघ तजि कबहुं दूसरी
ओर २८३ पवि पाहन दामिनि गरज झरिझकोर खरि खीझि ॥
रोष न प्रीतम दोष लखि तुलसी रामहिं रीझि २८४ मान राखिबो
मांगिबो पियसों नित नवनेहु ॥ तुलसी तीनिउ तब फबैं जब चा-
तक मतलेहु २८५ तुलसी चातकही फबै मान राखिबो प्रेम ॥ ब क्र

बूंद लखि स्वातिहू निदरि निबाहत नेम २८६ तुलसी चातक मांगनो एक एक धनि दानि ॥ देत जो भूभाजनभरत लेत जो घूटक पानि २८७ तीनि लोक तिहुँ कालमें चातकहीके माथ ॥ तुलसी जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ २८८ प्रीति पपीहा पयदकी प्रकट नई पहिंचानि ॥ याचक जगति कनाउड़ी कियो कनौड़ो दानि २८९ नहिं याचत जल संगृही शीशनाइमहिलेइ ॥ ऐसे मानिहि मांगनेहि को वारिद विन देइ २९० किन किन ज्यायो जगतमें जीवनदायक दानि ॥ भयो कनौड़ो याचकहि पयदप्रेम पहिंचानि २९१ साधन सांसत सब सहत सबहिं सुखद फल लाहु ॥ तुलसी चातक जलधिकी रीति बूझि बुध काहु २९२ चातक जीवनदायकहि जीवन समय सुरीति ॥ तुलसी अलख न लखि परै चातक प्रीति प्रतीति २९३ जीव चराचर जहँ लगे है सबको हित मेह ॥ तुलसी चातक मन बस्यो घनसो सहज सनेह २९४ डोलत विपुल विहँग बन पियत पोपरिन बारि ॥ सुयश धवल चातक नवल तुहीं भुवन दशचारि २९५ मुख मीठे मानस मलिन कोकिल मोर चकोर ॥ सुयश धवल चातक नवल रहेउ भुवन भरि तोर २९६ बासबेष बोलनि चलनि मानस मञ्जु मराल ॥ तुलसी चातक प्रेमकी कीरति बिशद बिशाल २९७ प्रेम न परखिय पुरुषपन पयद सिखावन एह ॥ जगकहै चातक पातकी ऊसर वरषै मेह २९८ होइ न चातक पातकी जीवनदानिन मूढ़ ॥ तुलसी गति प्रहलाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़ २९९ गरज आपनी सबनको गरज करत उरआनि ॥ तुलसी चातक चतुरभो याचक जानि सुदानि ३०० चरग चंगुगत चातकहि नेम प्रेम की पीर तुलसी परबस हाड़पर परि है पुहुमी नीर ३०१ बंध्यो बधिक

परयो पुण्य जल उलटि उठाई चोंच ॥ तुलसी चातक प्रेमपट परतहु लगी न खोंच ३०२ अंडफोरि कियो चेटुवा तुख पूरो नीर निहारि ॥ गहि चंगुल चातक चतुर डारयो बाहिर बारि ३०३ तुलसी चातक देत सिख सुतहि बारहीबार ॥ तात न तर्पण कीजिये बिना बारिधर धार ३०४ ॥ सोरठा ॥ जियत न नाई नारि चातक घन तजि दूसरहि ॥ सुरसरिहूं की बारि मरत मांगेऊ अरध जल ३०५ सुनरे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेमको ॥ परिहरि चारिउ मास जो अचवै जल स्वातिको ३०६ यांचै बारहमास पियै पपीहा स्वाति जल ॥ जान्यो तुलसीदास जोगवत नेही नेहमन ३०७ ॥ दोहा ॥ तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पियास ॥ पियत स्वातिजल जान जग याचक बारह मास ३०८ आलवाल मुक्ताहलनि हिय सनेह तरुमूल ॥ होइ हेतु चित चातकहि स्वाति सलिल अनुकूल ३०९ बिबिरसनीतन श्याम हैं बक्रचलनि बिषखानि ॥ तुलसीयश श्रवणन सुन्यो शीश समर्प्यो आनि ३१० उष्ण काल अरु देहषित मगपंथी तन ऊख ॥ चातक बतियां नारुचे अनजल सींचे रूख ३११ अनजल सींचे रूखकी छायाते बरुघाम ॥ तुलसी चातक बहुतहै यह प्रबीणका काम ३१२ एक अङ्ग जो सनेहता निशि दिन चातक नेह ॥ तुलसी जासों हितलगै वहि अहार वो देह ३१३ आपु व्याधको रूपधरि कुहौ कुरङ्गहि रागु ॥ तुलसी जो मृगमन मुरै परै प्रेमपट दागु ३१४ तुलसी मन निज द्युतिफुनहि व्याधहि देउ दिखाय ॥ बिछुरत होइ न आंधरो ताते प्रेम न जाय ३१५ जरत तुहिन लखि बनजवन रबिदै पीठिपराउ ॥ उदय बिकस अथवतसकुच मिटै न सहज सुभाउ ३१६ देउ आपने हाथ जल मीनहि माहुर घोरि ॥ तुलसी जिय जो बारि बिनु तौतुदेहि

कबि खोरि ३१७ मकर उरग दादुर कमठ जलजीवन जलगेह ॥
तुलसी एकै मीनके है सांचिलो सनेह ३१८ तुलसी मिटै न मरि
मिटेहु सांचो सहज सनेहु ॥ मोरशिखावन सूरहूं गरजत पलुहत
मेहु ३१९ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत करत सबकोइ ॥ तुलसी
मीन पुनीतते त्रिभुवन बड़ो न कोइ ३२० तुलसी जप तप नेम
ब्रत सब सबहीं ते होइ ॥ लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ३२१
कुदिनहितू सोहित सुदिन हित अनहित किन होइ ॥ शशिछबि
हर रविसदन तउ मित्र कहत सबकोइ ३२२ कै लघु कै बड़ मीत
भल सम सनेह दुखसोइ ॥ तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस मिलै महा
बिष होइ ३२३ मान्य मीत सों सुख चहै सो न छुये छल छांह ॥
शशि त्रिशंकु केकयी गति लखि तुलसी मनमांह ३२४ कही
कठिन कृत कोमलहु हित हठि होइ सहाइ ॥ पलक पानिपर
ओड़िअत समुझि कुघाइ सुघाइ ३२५ तुलसी बैर सनेह दोउ
रहित बिलोचन चारि ॥ सुरहिं सेवये आदरहि नींदहि सुरसरि
बारि ३२६ रुचै मांगनेहि मांगिबो तुलसी दानहि दानु ॥ आ-
लस अनखन आचरज प्रेम पिहानी जानु ३२७ अमिय गारि गा-
रेउ गरल मारिकरी करतार ॥ प्रेम बैरकी जननि युग जानहि ब-
धन गँवार ३२८ सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहैं प्रियबैन ॥
तेपै तिन्ह के जाय घर जिनके हिये न नैन ३२९ हित पुनीत सब
स्वारथहि अरि अशुद्ध बिनुजाड़ ॥ निजमुख मानिक सम दशन
भूमि परे ते हाड़ ३३० माखी काक उलूक बक दादुर से भये लोग ॥
भले ते शुक पिक मोरसे कोउ न प्रेम पथ योग ३३१ हृदय कपट
बरवेष धर बचन कहैं गढ़ि छोलि ॥ अबके लोग मयूर ज्यों क्यों
मिलिये मन खोलि ३३२ चरण चोंच लोचन रँगो चली मराली

चाल ॥ छीनि नीर विवरण सबै बक उघरत तेहि काल ३३३
मिलो जो सरलहि सरलहै कुटिलन सहज विहाइ ॥ शीश हेतु
ज्यों वक्रगति व्यालन बिले समाइ ३३४ कृशधन सखहि न देव
दुख मुयहु न मांगव नीच ॥ तुलसी सज्जन की रहनि पावकपानी
बीच ३३५ संग सरल कुटिलहि भये हरि हर करहिं निबाहु ॥ ग्रह
गनती गति चतुर विधि कियो उदर विनुराहु ३३६ नीच निचाई
नहिं तजै सज्जनहूके संग ॥ तुलसी चंदन विटप बसि बिन विष
भये न भुवंग ३३७ भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच ॥ सुधा
सराही अमरता गरल सराही मीच ३३८ मिथ्या माहुर सज्जनहि
खलहि गरल सम सांच ॥ तुलसी छुवत पराय ज्यों पारद पावक
आंच ३३९ संतसंग अपवर्गकर कामी भवकर पंथ ॥ कहहिं साधु
कवि कोबिद श्रुति पुराण सब ग्रंथ ३४० सुकृत न सुकृती परिहरै
कपट न कपटी नीच ॥ भरत सिखावन सादियो गीधराज मारीच
३४१ सुतरु सुजन वन ऊखसम खलटँकिकारूखान ॥ परहित
अनहित लागिसब सांसति हँसति समान ३४२ पियहि सुमनरस
अलि विटप काटिकोलि फल खात ॥ तुलसी तरुजीवै युगल सु
मति कुमति की बात ३४३ अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दियेका
लाख ॥ दुइज न चन्द्रा देखिये उदय कहा भरिपाख ३४४ ज्ञान
अनभलो को सबहि भलो भलेहू काउ॥सींग सूंड़रद मूलनख करत
जीव जड़ घाउ ३४५ तुलसी जगजीवन अहित कतहूं कोउ हित
जानि ॥ शोषक भानु कृशानु महि पवन एक घन दानि ३४६
सुनिय सुधा देखी गरल सब करतूति कराल ॥ जहँ तहँ काकउलूक
बक मानस सुकृत मराल ३४७ जलचर थलचर गगनचर देवदनुज
नरनाग ॥ उत्तम मध्यम अधम खल दशगुण बढ़त विभाग ३४८

बलिमिस देखे देवता करमिस मानवदेत ॥ मुये मार अब चारहत स्वारथ साधन हेत ३४९ सुजन कहत भल पोचपथ पायन परखे भेद ॥ कर्मनाश सुरसरित मिस विधिनिषेध बदवेद ३५० मणि भाजन मधुपाई पूरण अमी निहारि ॥ का छांड़िय का संग्रही कहहु विवेक विचारि ३५१ उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सिकता पानि ॥ प्रीति परीक्षा तिहुँन को बैर व्यतिक्रम जानि ३५२ पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पांच ॥ लखहिं सुजन परिहरहिं खल सुनहु सिखावन सांच ३५३ नीच निरादर ऊंचके आदर सुखद विशाल ॥ कदली बदली बिटप गति पेखहु पनश रसाल ३५४ तुलसी अपनो आचरण भलो न लागत कासु ॥ तेहि न बसात जो खात नित लहसुनहू को बासु ३५५ बुधसों विवेकी विमल मति जेहिके रोष न राग ॥ सुहृद सराहत साधु जेहि तुलसी ताको भाग ३५६ आपु आपु कहँ सब भलो आपन कहँ कोइ कोइ ॥ तुलसी सबकहँ जो भलो सुजन सराहिय सोइ ३५७ तुलसी भलो सुसङ्गते पोच कुसङ्गति होइ ॥ नाउ किन्नरी तीर असि लोह विलोकहु लोइ ३५८ गुण संगति गुरु होइ सो लघु संगति लघु नाम ॥ चारि पदारथमें गनै नरक द्वारहू काम ३५९ तुलसी गुरु लघुता लहत लघु संगति परिणाम ॥ देवी देव पुकारियत नीच नारि नर नाम ३६० तुलसी किये कुसंगथिति होइ दाहिनो बाम ॥ कहि सुनि सकुचिय सूमखल गत हरशङ्कर नाम ३६१ बसि कुसङ्ग चह सुजनता ताकी आस निरास ॥ तीरथहूको नाम भो गया मगहके पास ३६२ राम कृपा तुलसी सुलभ गंग सुसंग समान ॥ योजनपरै जो जन मिलै कीजै आपु सनान ३६३ ग्रह भेषज जल पवन पटपाइ कुयोग सुयोग ॥ होइ कुवस्तु सुवस्तुजग

लखहिं सुलक्षण लोग २६४ जन्म योग में जानियत जग बिचित्र गति देखि ॥ तुलसी आखर अङ्करस रँगे बिभेद बिशेखि २६५ आखर जोरि बिचार करु सुमति अङ्क लिखि लेखु ॥ योग कुयोग सुयोगमय जग गति समुझि बिशेखु २६६ करु बिचार चल सुपथ भल आदि मध्य परिणाम ॥ उलटे जपे जे रामरा सूधे राजा राम २६७ होइ भले के अनभलो होय दानिके सूम ॥ होइ कपूत सपूत के ज्यों पावकमें धूम २६८ जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह करतार ॥ सन्त हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार २६९॥ सोरठा ॥ पाट कीटते होइ ताते पाटम्बर रुचिर ॥ कृमि पालै सब कोइ परम अपावन प्राणसम २७० ॥ दोहा ॥ जो जो जेहि जेहि रस मगन तहँ सो मुदित मुनि मानि ॥ रस गुण दोष विचारिबो रसिक रीति पहिंचानि २७१ सम प्रकाशतम पाखदुहु नाम भेद बिधि कीन्ह ॥ शशिपोषक शोषक समुझि जग यश अपयश दीन्ह २७२ लोक वेदहूंलौंदगा नाम भलेको पोच ॥ धर्मराज यम-राज पवि कहत सकोच न शोच २७३ बिरुचि परखि यह सुजन जन राखि परखियहि मन्द ॥ बड़वानल शोषत उदधि हर्ष बढ़ा-वत चन्द २७४ प्रभु सन्मुख भय नीचनर निपट भये बिकराल॥ रबिरुख लखि दर्पण फटिक उगिलत ज्वाला जाल २७५ प्रभु समीपगत सुजन जन होत सुखद सो विचारि ॥ लवण जलधि जीवन जलद बर्षत सुधा सवारि २७६ नीच निरावहिं निरसतरु तुलसी सींचहिं ऊख ॥ पोषत पयद समान सब बिष पियूषके रूख २७७ बरषि बिश्व हर्षित करत हरत ताप अघप्यास ॥ तुलसी दोष न जलद को जो जल जरै जवास २७८ अमर दानि याचक मर-हिं मरि मरि फिरि फिरि लेहिं ॥ तुलसी याचक पातकी दातहि

दूषण देहिं ३७९ लखि गयंद लै चलहिं भजि श्वान सुखानो हाड़॥ गज गुण मोल अहारबल महिमा जान किराड़ ३८० कै निदरहुकै आदरहु सिंहहि श्वान सियार।हरष बिषाद न केशरिहि कुंजर गजहि निहार ३८१ ठाढ़ो द्वार न देसकै तुलसी जे नर नीच॥ निन्दहिं बलि हरिचन्द्रको का कियो करण दधीच ३८२ ईश शीश बिलसत बिमल तुलसी तरल तरंग॥ श्वान सरावक के कहे लघुता लहै न गंग ३८३ तुलसी देवला देवकी लागे लाख करोरि॥ काक अभागे हगिभरयो महिमा भई कि थोरि ३८४ निज गुण घटत न नाग नग परखि परोहत कोल॥ तुलसी प्रभु भूषण किये गुञ्जा बढ़ै न मोल ३८५ राकापति षोडश उअहिं तारागण समुदाइ॥ सकल गिरिन्ह दव लाइये बिनु रवि राति न जाइ ३८६ भलो कहै बिन जानिहूं बिनु जाने अपवाद॥ ते नर गाडुर जानि जिय करिय न हर्ष बिषाद ३८७ परसुख सम्पति देखि सुख जरहिं जे जड़ बिनुआगि॥ तुलसी तिनके भाग ते चलै भलाई भागि ३८८ तुलसी जे कीरति चहहिं परकी कीरति खोइ॥ तिनके मुँह मसि लागिहै मिटिहि न मरिहैं धोय ३८९ तन गुण धन महिमा धरम तेहि बिनु जो अभिमान॥ तुलसी जियत बिड़म्बना परिणामहि गत जान ३९० सासु ससुर गुरु मातु पितु प्रभु भयो चहैं सबकोइ॥ होनो दूजी ओरको सुजन सराहियसोइ ३९१ शठ सहि सांसति पति लहत सुजन कलेश न काय॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन पूजिये गण्डकि शिला सुभाय ३९२ बड़े बिबुध दरबारते भूमिभूप दरबार॥ जापक पूजक पेखियत सहत निरादर भार ३९३ बिनु प्रपंच छल भीख भलि लहिय न कियेकलेश॥ बामन बलिसों छल कियो दियो उचित उपदेश ३९४ भलो भले से छल किये जन्म

कनौड़ो होइ ॥ श्रीपति शिर तुलसी लसति बलि बामनगति सोइ
३९५ विबुध काज बामन बलिहि छलो भलो जियजानि॥प्रभुता
तजि बश भे तदपि मनकी गई न ग्लानि ३९६ सरल बक्र गति
पञ्चग्रह चपरि न चितवत काहु ॥ तुलसी सूधे शूर शशि समय
विडम्बित राहु ३९७ खलउपकार विकारफल तुलसी जानजहान॥
मेढुक मरकट बनिक बक कथा सत्य उपखान ३९८ तुलसी खल
बाणी मधुर सुनि समुझिय हिय हेरि ॥ राम राज बाधक भई मूढ़
मन्थरा चेरि ३९९ जोंक सूधि मन कुटिल गति खल विपरीत वि-
चारु ॥ अनहितसों नित सोखसो सोहित शोषनहारु ४०० नीच
गुणी ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास ॥ ढीलिदियो गिरिप-
रतमहि खैंचत चढ़त अकास ४०१ भरदरबरषत कोस शत बचैं जे
बूंद बराइ ॥ तुलसी त्यों खल बचन शर हिये गये न पराइ ४०२
पेरत कोल्हू मेलि तिल तिली सनेही जानि ॥ देखि प्रीतिकी रीति
यह अब देखी बरसानि ४०३ सहवासी काचोगिलहि पुरजन पाक
प्रवीन ॥ कालक्षेप केहि मिलकरहिं तुलसी खग मृग मीन ४०४
जासु भरोसे सोइये राखि गोदपर शीश ॥ तुलसी तासु कुचाल ते
रखवारो जगदीश ४०५ मारि खोज लहि सोह करि करि मत
लाज न त्रास ॥ मुये नीचते मीच बिनु जे इनके विश्वास ४०६
परद्रोही परदाररत परधन परअपवाद ॥ तेनर पामर पापमय देहधरे
मनुजाद ४०७ बचन वेषक्यों जानिये मन मलीन नरनारि ॥ शू
र्पणखा मृगपूतना दशमुख प्रमुख विचारि ४०८ हँसनि मिलनि
बोलनि मधुर कटु करतब मनमाहँ ॥ छुवत जो सकुचै सुमति सो
तुलसी तिनकी छाहँ ४०९ कपटसार सूची सहस बांधि बचन पर-
वास ॥ कियो दुराउ चहै चातुरी सो शठ तुलसीदास ४१० बचन

विचार अचार तन मन करतब छलछूति ॥ तुलसी क्यों सुख पाइये अन्तर्य्यामिहिधूति ४११ शारदूलको स्वांगकर कूकुरकी करतूति॥ तुलसी तापर चाहिये कीरति विजय बिभूति ४१२ बड़ेपाप बाढ़े किये छोटे किये लजात ॥ तुलसी तापर सुखचहत बिधिसों बहुत रिसात ४१३ देशकाल करता करम बचन बिचारबिहीन ॥ ते सुर तरुतर दारिदी सुरसरितीर मलीन ४१४ साहसही शिख कोपवश किये कठिन परिपाक ॥ शठ सङ्कट भाजन भये हठि कुजाति कपि पाक ४१५ राजकरत बिनु काजही करैंकुचालि कुसाज ॥ तुलसी ते दशकन्ध ज्यों जैहैं सहित समाज ४१६ राज करत बिन काजही ठठहिं जे कूर कुठाट ॥ तुलसी ते कर राज ज्यों जैहैं बारहबाट ४१७ सभा सुयोधनकी शकुनि सुमति सराहन योग ॥ द्रोणविदुर भीषम हरिहि कहैं प्रपञ्ची लोग ४१८ पाण्डुसुवन की सदसते नीको रिपु हित जानि ॥ हरिहरसम सब मानियत मोहजानकी बानि ४१९ हितपरबढ़ै बिरोध जब अनहितपर अनुराग ॥ रामबिमुख बिधिबामगति सगुण अघायअभाग ४२० सहज सुहृद गुरुस्वामि सिख जो न करै शिर मानि ॥ सो पछताय अघायउर अवशि होइ हितहानि ४२१ भरुहाये नट भाटके चपरि चढ़े संग्राम ॥ कैवे भाजे आयहैं कै बांधे परिणाम ४२२ लोकरीति फूटी सहै आंजी सहै न कोइ ॥ तुलसी जो आंजी सहै सो आंधरो न होइ ४२३ भींनेभल आड़ेहु भलो भलो न घालेउ घाउ ॥ तुलसी सबके शीश पर रखवारो रघुराउ ४२४ सुमति बिचारहिं परिहरहिं दल सुमनहुँ संग्राम ॥ सकुल गये तनु बिनु भये साखी यादव काम ४२५ कलह न जानब छोटकरि कलह कठिन परिणाम॥ लगति अगिन लघु नीचगृह जरत धनिक धन धाम ४२६ रोष क्षमाके दोषगुण

सुनि मनु मानहि सीख॥ अविचल श्रीपति हरिभये भूसुर लहै न
भीख ४२७ कौरव पाण्डव जानिये क्रोध क्षमाके सीव॥ पांचहि
मारि न सहिसकै सवो सँहारे भीम ४२८ बोल न मोटे मारिये
मोटी रोटी मारु॥ जीति सहजसम हारिबो जीते हारि निहारु
४२९ जो परिपांय मनाइये तासों रूठि बिचारि॥ तुलसी तहां न
जीतिये जहँ जीते है हारि ४३० जूझेते भल बूझिबो भली जीति
ते हारि॥ डहँकेते डहँकाइबो भलो जो करिय बिचारि ४३१ जा
रिपुसों हारेहु हँसी जिते पाय परितापु॥ तासों रारि बिचारिये स-
मय सम्हारे आपु ४३२ जो मधुमरै न मारिये माहुरदेइ जो काउ॥
जगजीते हारे परशु हारिजिते रघुराउ ४३३ वैरमूलहर हितबचन प्रे-
ममूल उपकार॥ दोहा शुभसन्दोहसी तुलसी किये विचार ४३४
रोष न रसना खोलिये बरु खोलिय तरवारि॥ सुनत मधुर परिणाम
हित बोलिय बचन विचारि ४३५ मधुरवचन कटुबोलिबो बिनुश्रम
भाग अभाग॥ कुहूकुहू कलकण्ठरव काका कररत काग ४३६ पेट
न फूलत बिनुकहे कहु तन लागे ढेरु॥ सुमति बिचारे बोलिये स-
मुझि कुफेरु सुफेरु ४३७ छियो न तरुणि कटाक्षशर करेउ न क-
ठिन सनेहु॥ तुलसी तिनकी देहकी जगतकवच करलेहु ४३८
शूरसमर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु॥ विद्यमान रणपा-
यरिपु कायर कथहिं प्रलापु ४३९ वचनकहै अभिमानके पारथ
पेखतु सेतु॥ प्रभु तियलूटत नीच नर जय न मीचु तेहि हेतु ४४०
राम लषण विजयी भये मनहु गरीबनिवाज॥ मुखर बालि रावण
गये घरही सहित समाज ४४१ खग मृग मीत पुनीतकिय बनहु
राम नयपाल॥ कुमति बालि दशकण्ठ घर सुहृद बन्धु कियेकाल
४४२ लवै अघाने भूंस ज्यों लखै जीतिमें हारि॥ तुलसी सुमति

सराहिये मग पगधरै विचारि ४४३ लाभ समयको पालिबो हानि समयकी चूक॥ सदा बिचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिनदूक ४४४ सिन्धुतरण कपि गिरिहरण काज साइँ हित दोउ॥ तुलसी समयहि सम बड़ो बूझत कहँ कोउ कोउ ४४५ तुलसी मीठो अमी ते मांगी मिलै जो मीचु॥ सुधा सुधाकर समय बिनु कालकूट ते नीचु ४४६ तुलसी असमयको सखा धीरज धर्म विवेक॥ साहित साहस सत्यव्रत राम भरोसो एक ४४७ समरथ कोउ न रामसों सीयहरण अपराधु॥ समयहि साधे काज सब समय सराहहिंसाधु ४४८ तुलसी तीरहु के चले समय पाइबो थाह॥ धाइ न जाइ थ-हाइबो सर सरिता अवगाह ४४९ तुलसी जसि भवितव्यता तैसी मिलै सहाय॥ आपुन आवै ताहिपै कि ताहि तहां लैजाय ४५० कै जुझिबो कै बूझिबो दान कि काय कलेश॥ चारि चारु पर-लोकपथ यथायोग उपदेश ४५१ पात पात को सींचिबो न करु सरगतरु हेत॥ कटिल कटुक फर फरैगो तुलसी करत अचेत ४५२ गढ़िबँधते परतीति बड़ि जेहि सबको सबकाज॥ कहब थोर समु-झब बहुत गाढ़े बढ़त अनाज ४५३ अपनो अपने करथपै तिय पूजहिं निजभीत॥ फलै सकल मनकामना तुलसी प्रीतिप्रतीत ४५४ बरषत करषत आपुजल हरषत अर्वनिभानु॥ तुलसीचाहत साधु सुर सबसनेह सनमानु ४५५ श्रुति गुणकर गुनपुजुग मृग यहि रेवती सखाउ॥ देहि लेहि धन धरणिधरु गयहु न जाइहि काउ ४५६ ऊगुनपूगुन बिरजक्रम आभ अमू गुणसाथ॥ हरो धरी गाड़ो दियो घन फिरि चढ़े न हाथ ४५७ रबि हर दिश गुण रस नयन मुनि प्रथमादिक बार॥ तिथि सबकाज नशावनी होइ कुयोग बिचार ४५८ शशि शर नव दुइ छ दश गुण मुनि फल बसु हर

भानु ॥ मेषादिक क्रमते गनहि घातचन्द्र जिय जानु ४५९ नकुल सुदरशन दरशनी क्षेमकरी चषचाप ॥ दशदिशि देखत सगुनशुभ पूजहि मन अभिलाष ४६० सुधासाधुपुरतरुसुमन सुफल सुहावनि वात ॥ तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमङ्गल सात ४६१ भरत शत्रुसूदन लषण सहित सुमिरि रघुनाथ ॥ करहु काज शुभ सांच सब मिलहि सुमङ्गल साथ ४६२ राम लषण कौशिक सहित सुमिरहु करहु पयान ॥ लक्ष लाभलै जगत यश मङ्गल सगुन प्रमान ४६३ अतुलित महिमा बेद की तुलसी किये बिचार ॥ जो निंदत निंदितभयो बिदित बुद्धअवतार ४६४ बुद्धिकिसान सर वेद निज मते खेत सब सीच ॥ तुलसी कृषि लखि जानिबो उत्तम मध्यमनीच ४६५ सहि कुबोल सांसति सकल अँगइ अनट अपमान ॥ तुलसी धर्म न परिहरिय कहि करिगये सुजान ४६६ अनहित भयपरहित किये हरअनहित हितहानि ॥ तुलसी चारुविचारुभल करिय काज सुनि जानि ४६७ पुरुषारथ पूरबकरम परमेश्वर परधान ॥ तुलसी पैरत सरित ज्यों सबहि काज अनुमान ४६८ चलहु नीतिमग राम पग नेह निबाहन नीक ॥ तुलसी पहिरिय सो बसन जो न पखारे फीक ४६९ दोहाचारु बिचारुचलु परिहरि बादबिवाद ॥ सुकृत सीवस्वारथ अवधि परमारथ मर्य्याद ४७० तुलसी समरथ सुमति जो सुकृती साधु सयान ॥ जो बिचारि व्यवहरिय जग खर्च लाभ अनुमान ४७१ जाइ योग जगक्षेम बिनु तुलसी के हितराखि ॥ बिन पराध भृगुपति नहुष बेनु बकासुर साखि ४७२ बढ़िप्रतीति गठिबन्धते बड़ोयोगते क्षेम ॥ बड़ो सुसेवक सांइते बड़ो नेमतेप्रेम ४७३ शिष्य सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन सांच ॥ सुनिसमभहु पुनि परिहरहु परम निरञ्जन पांच ४७४ नारिनगर भोजन सचिव

सेवक सखा अगार ॥ सरस परिहरे रङ्गरस निरस बिषाद बिकार ४७५ दूटहिंनिज रुचिकाज करि रूठहिं काज बिगारि ॥ तीय तनय सेवक सखा मनके कण्टकचारि ४७६ दीरघरोगी दारिदी कटु बच लोलुप लोग ॥ तुलसी प्राणसमानते होइँ निरादरयोग ४७७ पाहीखेती लगनबढ़ ऋणकुब्याज मगखेत ॥ बैर बढ़े सो आपने किये पांच दुखहेत ४७८ घायलगै लोहा ललकि खींच लेइ नइ नीचु ॥ समरथ पापीसों बयर जानि बिसाही मीचु ४७९ शोचिय गृही जो मोहबस करै कर्मपद त्याग ॥ शोचिय यती प्रपञ्च रचि बिगत बिवेक बिराग ४८० तुलसी स्वारथ सांमुही परमारथ तन पीठ ॥ अन्ध कहे दुखपाइहै डिठिआरो केहि डीठ ४८१ बिनु आंखिनकी पानहीं पहिंचानत लखि पाइ ॥ चारिनयनके नारिनर सूझत मीच न माइ ४८२ जुपै मूढ़ उपदेशको होतो योग जहान ॥ क्यों न सुयोधन बोधके आये श्याम सुजान ४८३ ॥ सोरठा ॥ फूलै फरै न बेत यदपि सुधा बरषहिं जलद ॥ मूरख हृदय न चेत जो गुरु मिलैं बिरञ्चि शिव ४८४ ॥ दोहा ॥ रीझ आपनी बूझपर खीझ बिचारि बिहीन ॥ ते उपदेश न मानहीं मोह महोदधिमीन ४८५ मन समुझै अन शोचनो अवशि समुझिअहि आपु ॥ तुलसी आपु न समुझिये पल पल परि परितापु ४८६ कूप खनतमन्दिर जरत आये धारिबबूर ॥ ववहिं नवहिं निज काज शिर कुमतिशिरोमणि कूर ४८७ निडर ईशते बीस कै बीसबाहु सो होइ ॥ गयो गयो कहै सुमति सब भयो कुमति कह कोइ ४८८ जो सुनि समुझि अनीतिरत जागतरतहै जुसोइ॥ उपदेशबो जगाइबो तुलसी उचित न होइ ४८९ बहुसुख बहुरुचि बचनबहु बहुअचार ब्यवहार॥ इनको भलो मनाइबो यह अज्ञान अपार ४९० लोगनि लोभ म-

नाइवो भलो होनकी आस॥ करत गगनको आयउ सो शठ तु-
लसीदास ४९१ अपयशयोग कि जानकी मणिचोरी कवकान्ह॥
तुलसी लोग रिझाइवो करपि कातिवो नान्ह ४९२ तुलसी जुपै
गुमान को हो तो कछू उपाउ॥ तौ कि जानकिहि जानि जिय
परिहरते रघुराउ ४९३ मांगि मधुकरी खात ते सोवत गोड़पसा-
रि॥ पाय प्रतिष्ठा वढ़िपरी ताते बाढ़ी रारि ४९४ तुलसी भेड़ी
की धसनि जड़ जनता सनमान॥ उपजतही अभिमान भो खो-
वत मूढ़ अपान ४९५ लही आंखि कव आंधरे बांझ पूत कव
ल्याय॥ कव कौड़ी काया लही जग बहराइच जाइ ४९६ तु-
लसी निरभय होत नर सुनियत सुरपुर जाइ॥ सो गति देखियत
अछत तन सुख सम्पति गति पाइ ४९७ तुलसी तोरत तीर तरु
वकहित हंसविडारि॥ विगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरिहूँ
वढ़ियारि ४९८ अधिकारी सव औसरा भलेउ जानिवे मन्द॥ सु-
धासदन वसुवारहौं चउथिउ चउथो चन्द ४९९ त्रिविध एक विधि
प्रभु अनुग अवसर करहिं कुठाट॥ सूधो टेढ़ो सम विषम सव महँ
वारहवाट ५०० प्रभुते प्रभुगन दुखद लखि प्रजहिं सँभारैराउ॥ करते
होत कृपाण की कठिन घोरघनघाउ ५०१ व्यालहुते विकराल
बड़ व्यालफेन जिय जानु॥ उहके खाये मरतहैं उहखाये विनुप्रानु
५०२ कारणसे कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर॥ कुलिश अस्थि
ते उपलते लोह कराल कठोर ५०३ काल विलोकत ईशरुख भानु
काल अनुहारि॥ रविहि राउ राजहि प्रजा बुध व्यवहरहि विचारि
५०४ यथा कमलपावन पवन पाइ कुसङ्ग सुसङ्ग॥ कहिअकुवास
सुवास।तिमि काल महीशप्रसङ्ग ५०५ भलेहु चलतपथयोवभय नृ-
पतियोग नय नेम॥ सुतिय सुभूपति भाषियत लोहपवारित हे-

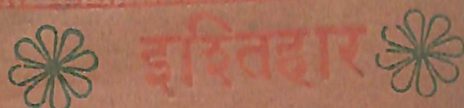
म ५०६ माली भानु किसानसम नीतिनिपुण नरपाल ॥ प्रजा भाग
बश होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल ५०७ बरषत हर्षत लोग सब
करषत लखै न कोइ ॥ तुलसी प्रजा सुभागते भूपभानुसोहोइ५०८
सुधा सुनाज कुनाज फल आम अशनसम जानि ॥ सुप्रभु प्रजा
हित लेहि कर सामादिक अनुमानि ५०९ पाके पकये बिटप दल
उत्तम मध्यम नीच ॥ फलनरुलहैं नरेश त्यों करि बिचार मनबीच
५१० रीझि खीझि गुरु देत सिख सखा सुसाहब साध ॥ तोरिखाय
फल होइ भल तरुकाटे अपराध ५११ धरणिधेनु चारित प्रजा तासु
बछये नहाइ ॥ हाथकछू नहिं लागिहै किये गोड़कीगाइ ५१२ चढ़ै
बधूरै चङ्ग ज्यों ज्ञान ज्यों शोक समाज ॥ कर्म्म धर्म्म सुख सम्पदा
ज्यों जानिवेकुराज ५१३ कण्टक करिकरि परतगिरि शाखासहस
खजूरि ॥ मरहिं कुनृपकरि करि कुनृप सो कुचाल भवभूरि ५१४
कालतोपची तुपकमहि दारु अनय कराल ॥ पापपलीता कठिन
गुरु गोलापुहमीपाल ५१५ भूमिरुचिर रावणसभा अङ्गदपद महि-
पाल ॥ धरम रावणहि सीय बल अचल होत शुभकाल ५१६ प्रीति
रामपद नीतिरत धर्म्मप्रतीति सुभाइ ॥ प्रभुहि न प्रभुता परिहरहि
कबहुँ वचन मन काइ ५१७ करके कर मनके मनहि वचन वचन
गुण जानि ॥ भूपहि भूलि न परिहरै बिजय बिभूति सयानि ५१८
गोली बाण सुमन्त्र शर समुझि उलटि मन देखु ॥ उत्तम मध्यम
नीच प्रभु बचन बिचारि बिशेखु ५१९ शत्रु सयानो सलिल ज्यों
राखि शीश रिपु नाव ॥ बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहूं
दिशिधाव ५२० रैयत राजसमाज घर तन धन धर्म सुबाहु ॥ शांत
सुसचिवन सौंपिसुख बिलसहिं नित नरनाहु ५२१ मुखिया सुखसों
चाहिये खान पानको एक ॥ पालै पोपै सकल अँग तुलसी सहित

बिबेक ५२२ सेवक कर पद नयनसे मुखसे साहब होय ॥ तुलसी प्रीति कि रीति सुनि सुकबि सराहहिं सोय ५२३ मन्त्री गुरु अरु वैद्य जो प्रिय बोलहिं भय आश ॥ राज धर्म्म तन तीन कर होइ बेगही नाश ५२४ रसना मन्त्री दशनजन तोष पोष निजकाज॥ प्रभुकरसेन पदादिका बालक राजसमाज ५२५ लकड़ी डौआ करछुली सरसुकाज अनुहारि ॥ सो प्रभु संग्रह परिहरहि सेवक सखा बिचारि ५२६ प्रभु समीप छोटे बड़े निबल होत बलवान ॥ तुलसी प्रकट बिलोकिये कर अँगुली अनुमान ५२७ साहबते सेवकबड़ो जो निज धर्मसुजान ॥ राम बांधि उतरे उदधि नाँघिगयो हनुमान ५२८ तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहि अनुकूल ॥ सबहि भांति सबकहँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ५२९ सघन सगुण सधरम सगण सबल समाइ महीप ॥ तुलसी जे अभिमानबिन ते त्रिभुवन के दीप ५३० तुलसी निज करतूति बिनु मुक्तजानि जब कोइ ॥ गयो अजामिल लोकहरि नाम सक्यो नहिं धोइ ५३१ बड़ो गहेते होत बड़ ज्यों बावनकर दण्ड ॥ श्रीप्रभुके सँगसों बड़ो गयो अखिल ब्रह्मण्ड ५३२ तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ उठाय ॥ प्रतिग्रही जीवै नहीं दाता नरकै जाय ५३३ आन न छोड़ो साथ जब तादिन हितू न कोइ ॥ तुलसी अम्बुज अम्बुबिन तरणि तासु रिपु होइ ५३४ उरबी परिकुलहीनहीं ऊपर कला प्रधान ॥ तुलसी देखु कलाय गति साधन धन पहिंचान ५३५ तुलसी संगति पोचकी सुजन होति भयदानि॥ यों हरिरूप सुताहिते कीनो गोहरि आनि ५३६ कलिकुचालि शुभमतिहरणि सरलैदंडै चक्र ॥ तुलसी यह निश्चय भई बाढ़ी लेत न बक्र ५३७ गो खग शेष गवारिखग तीनौमाह बिशेक॥ तुलसी पीवैं फिरचलैं रहैं फिरैं

सँग एक ५३८ साधन समय सो सिद्धिलहि उभै मूल अनुकूल॥ तुलसी तीनिउ समय सम ते महिमङ्गलमूल ५३९ मातु पिता गुरु स्वामि सिख शिरधरि करहिं स्वभाय॥ लहेउ लाभ तिन जन्मकर नतरु जन्म जग जाय ५४० अनुचित उचित विचार तजि जे पालहिं पितु बैन॥ ते भाजनसुख सुयशके बसहिं अमरपतिऐन ५४१ सोरठा॥ सहज अपावनि नारि पति सेवत शुभगति लहै॥ यश गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहिं प्रिय ५४२ दोहा॥ शरणागतकहँ जे तजहिं निज अनहित अनुमानि॥ ते नर पाँवर पापमय तिन्हैं बिलोकतहानि ५४३ तुलसी तृण जलकूलको निरधन निपट निकाज॥ कीराखै की सँगचलै बाँहगहेकीलाज ५४४ रामायण अनुहरत सिख जगभयो भारत रीति॥ तुलसी शठकीको सुनै कलिकुचालिपर प्रीति ५४५ पात पातके सींचिबे बरी बरीके लोन॥ तुलसी खोटे चतुरपनि कलि डहके कहु कौन ५४६ प्रीति सगाई सकल गुण बणिज उपाय अनेक॥ कलबलछल कलिमल मलिन डहकत एकहिएक ५४७ दम्भसहित कलिधर्म्म सब छल समेत व्यवहार॥ स्वारथसहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार ५४८ चोर चतुर बटपार भट प्रभु प्रिय भरुहाभण्ड॥ सबभक्षक परमारथी कलिसुपन्थ पाखण्ड ५४९ अशुभ बेष भूषण धरैं भक्ष अभक्ष जे खाहिं॥ ते योगी ते सिद्ध नर पूजित कलियुगमाहिं ५५० सोरठा॥ जे अपकारी चार तिन कर गौरव मान तेइ॥ मन बच कर्म लबार ते बक्ता कलिकालमहँ ५५१ दोहा॥ ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात॥ कौड़ीलगिते मोहबश करहिं बिप्र गुरुघात ५५२ बादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुमते कछु घाटि॥ जानहिं ब्रह्म सो विप्रबर आँखि दिखावहिं डाटि ५५३ साखी सबदी दोहरा कहि केहिनी उपखान॥ भगति निरूपहिं भगतकलि निन्दहिं वेद पुरान ५५४ श्रुति सम्बत हरिभक्तिपथ संयुत बिरति बिवेक॥ तेहि परिहरहिं बिमोहबश कलपहिं पन्थ अनेक ५५५ सकल धर्म बिपरीत कलि कलपित कोटि कुपन्थ॥ पुण्य पराय

बहारवन दुर पुराण शुभग्रन्थ ५५६ धातुबाद निरुपाधि बर सदगुरु लाभ सभीत ॥ देवदरश कलिकाल में पोथिन दुरे सभीत ५५७ शूरसदन तीरथ पुरन निपट कुचालि कुसाज॥मनहुँ मवासे मारि कलि राजत सहित समाज ५५८ गौड़ गवांर नृपालमहि यमन महामहिपाल ॥ सामन दामन भेदकलि केवल दण्ड कराल ५५९ फोरहि शिल लोढ़ा सदन लागे अढुक पहार ॥ कायर कूर कपूत कलि घर घर सहसड़हार ५६० प्रकट चारि पथ धर्म के कलिमहँ एक प्रधान ॥ येन केन बिधि दीन्हहू दान करें कल्यान ५६१ कलियुग समयुग आन नहिं जो नर कर विश्वास ॥ गाइ राम गुणगण विमल भवतर बिनहिं प्रयास ५६२ श्रवण घटहु पुनि दृगघटहु घटौ सकल बल देह ॥ इते घटे घटि है कहा जो न घटै हरि नेह ५६३ तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन ॥ अबतो दादुर बोलिहैं हमैं पूछिहै कौन ५६४ कुपथ कुतर्क कुचालि कलि कपट दम्भ पाखण्ड ॥ दहन रामगुणग्रामजिमि ईंधन अनल प्रचण्ड ५६५ सोरठा॥ कलि पाखण्डप्रचार प्रबल पापपामरपतित ॥ तुलसी उभै अधार रामनाम सुरसरि सलिल ५६६ दोहा ॥ रामचन्द्र मुखचन्द्रमा चित चकोर जब होइ ॥ रामकाज सब काम शुभ समय सुहावन सोइ ५६७ बीज रामगुणगण नयन जल अंकुर पुलकालि ॥ सुकृती सुनत सुखेत बर विलसत तुलसीशालि ५६८ तुलसी सहितसनेह नित सुमिरहु सीताराम ॥ सगुण सुमङ्गलशुभ सदा आदि मध्य परिणाम ५६९ पुरुषारथ स्वारथ सकल परमारथ परिणाम ॥ सुलभ सिद्धि सब साहबी सुमिरत सीताराम ५७० मणिमय दोहा दीप जहँ उर घर प्रकट प्रकाश ॥ तहँ न मोहमयतम तमी कलिकज्जली बिलाश ५७१ का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये सांच ॥ काम जो आवै कामरी कालै कौ कुमांच ५७२ ॥

इति श्रीगोसाईंतुलसीदासकृतदोहावलीसम्पूर्णा ॥




इश्तिहार

रामायण गुटका की० १)

विदित होकि कलिकलुषविध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्तशिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन करनेकी आवश्यकताही नहीं अब यह गुटकारामायण जैसी कि इस यन्त्रालयमें मुद्रित हुई है उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भरतनिवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थ का गुण न जानेंगे तब तक उनकी रुचि उसमें होना सर्वथा असंभवही है इससे इस रामायणगुटका का गुण प्रथम तो एक यही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ यह अब छपी है खरीदारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्ध कभी प्राप्त न भई होगी कारण यह कि मालिक मतबाने खुदही पहिलेही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथारुचि से चार और पांचबार जहांतक अशुद्धता की सम्भावनाहो तहांतक शुद्ध पढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होते हैं इसमें आठवां लवकुशकाण्ड भी युक्त है तिसपर भी एक यन्त्री क्या मानो रामायण की मंत्रीही है जो कि श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दन की आदि से अन्ततक मय तिथियों के सर्व्व रामायणही को ज्ञात कराती है और अग्निवेश रामायण भी इसमें युक्त है तिस पर भी कागज़ सचिक्कण श्वेत जैसी बम्बई की पसन्द कीजाती है इस रामायण गुटका में वह सब मौजूद हैं लेकिन बहुत थोड़ी छापीगई है अफ़सोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यह प्राप्त होना बड़ाही दुष्कर है अथवा गुटकारामायण अबकी छपी मिलेहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकैगी तो जो एक खरीदेगा वह चार रख छोड़ने को ज़रूरही लेलेगा ॥

मैनेजर अवध अखबार प्रेस
हजरतगंज-लखनऊ.